माँ विंधेश्वरी चालीसा

॥ दोहा ॥

नमो नमो विन्ध्येश्वरी,
नमो नमो जगदम्ब।
सन्तजनों के काज में,
करती नहीं विलम्ब॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी।
आदिशक्ति जगविदित भवानी॥

सिंह वाहिनी जै जगमाता।
जै जै जै त्रिभुवन सुखदाता॥

कष्ट निवारिनि जय जग देवी।
जै जै सन्त असुर सुर सेवी॥

महिमा अमित अपार तुम्हारी।
शेष सहस मुख वर्णत हारी॥

दीनन का दुःख हरत भवानी।
नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥

सब कर मनसा पुरवत माता।
महिमा अमित जगत विख्याता॥

जो जन ध्यान तुम्हारो लावै।
सो तुरतहिं वांछित फल पावै॥

तू ही वैष्णवी तू ही रुद्रानी।
तू ही शारदा अरु ब्रह्मानी॥

रमा राधिका श्यामा काली।
तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली॥

उमा माधवी चण्डी ज्वाला।
बेगि मोहि पर होहु दयाला॥

तू ही हिंगलाज महारानी।
तू ही शीतला अरु विज्ञानी॥

दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता।
तू ही लक्ष्मी जग सुख दाता॥

तू ही जान्हवी अरु उत्रानी।
हेमावती अम्ब निर्वानी॥

अष्टभुजी वाराहिनी देवा।
करत विष्णु शिव जाकर सेवा॥

चौसट्ठी देवी कल्यानी।
गौरी मंगला सब गुणखानी॥

पाटन मुम्बा दन्त कुमारी।
भद्रकालि सुनु विनय हमारी॥

बज्र धारिणी शोक नाशिनी।
आयु रक्षिनी विन्ध्यवासिनी॥

जया और विजया बैताली।
मातु संकटी अरु विकराली॥

नाम अनन्त तुम्हार भवानी।
वरनै किमि मानुष अज्ञानी॥

जापर कृपा मात तव होई।
जो वह करै चहै मन जोई॥

कृपा करहु मोपर महारानी।
सिद्ध करिए अब यह मम बानी॥

जो नर धरै मात तव ध्याना।
ताकर सदा होय कल्याना॥

विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै।
जो देवी कर जाप करावै॥

जो नर कहँ ऋण होय अपारा।
सो नर पाठ करै शतबारा॥

निश्चय ऋण मोचन होई जाई।
जो नर पाठ करै मन लाई॥

अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावै।
या जग में सो अति सुख पावे॥

जाको व्याधि सतावै भाई।
जाप करत सब दूर पराई॥

जो नर अति बन्दी महँ होई।
बार हजार पाठ कर सोई॥

निश्चय बन्दी ते छुटि जाई।
सत्य वचन मम मानहु भाई॥

जापर जो कछु संकट होई।
निश्चय देविहिं सुमिरे सोई॥

जा कहं पुत्र होय नहिं भाई।
सो नर या विधि करे उपाई॥

पाँच वर्ष जो पाठ करावे।
नौरातन महँ विप्र जिमावे॥

निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी।
पुत्र देहिं ता कहँ गुणखानी॥

ध्वजा नारियल आनि चढ़ावे।
विधि समेत पूजन करवावे॥

नितप्रति पाठ करे मन लाई।
प्रेम सहित नहिं आन उपाई॥

यह श्री विन्ध्याचल चालीसा।
रंक पढ़त होवे अवनीसा॥

यह जनि अचरज मानहुँ भाई।
कृपा दृष्टि जापर हुई जाई॥

जै जै जै जग मातु भवानी।
कृपा करहु मोहि पर जन जानी॥

[1]

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल